विविध भारती सेवा

कमल शर्मा
9892670794
kamalsharma.radiovoice@gmail.com

भारतीय उपमहाद्वीप का बेहद लोकप्रिय रेडियो-चैनल है- विविध भारती। इसका सुरुचिपूर्ण प्रसारण हमें समय के उस पार ले जाता है, जहां स्मृतियां फिर से जी उठती है। आकाशवाणी की गौरवशाली परंपरा के अनुसार आज भी विविध भारती ने भाषा की मर्यादा और प्रस्तुति की गरिमा का ध्यान रखा है।

इतिहास के अनगिनत उल्लेखनीय स्वर विविध-भारती से संग्रहालय में सुरक्षित हैं। आकाशवाणी के बेहद लोकप्रिय चैनल विविध-भारती का शुमार विश्व के सबसे बड़े नेटवर्क प्रसारण में होता है।

विविध-भारती की परिकल्पना को सन् 1957 में साकार करने वाली हस्तियों के नाम हैं- तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री डॉ. पी.वी. केसकर, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में तत्कालीन सचिव पी.एम. लाट और आकाशवाणी के तत्कालीन महानिदेशक जगदीशचंद्र माथुर। विविध-भारती का शुरूआती स्वरूप- ''ऑल इंडिया वेरायटी प्रोग्राम'' अर्थात अखिल भारतीय विविध रंगी कार्यक्रम का था... इस सेवा को ''विविध-भारती'' नाम दिया कला एवं साहित्य मनीषी पंडित नरेन्द्र शर्मा ने।

प्रसारण के आरंभिक दौर में पहले से रिकॉर्ड किए गए कार्यक्रम प्रसारित होते थे। 3 अक्टूबर सन् 1957- सुबह 10 बजकर 13 मिनट पर शॉर्ट-वेव 19 और 25 मीटर बैंड पर आकाशवाणी के पंचरंगी कार्यक्रम- ''विविध-भारती'' का जन्म हुआ।

''ये विविध-भारती है, आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम''... इस उद्घोषणा से पहले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियों ने शुभकामना के फूल बरसाए थे... गुप्त जी की वो पंक्तियां थीं-

''मानस भवन में आर्य जन जिसकी उतारें आरती
भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारती''

विविध-भारती की आवश्यकता क्यों पड़ी इस प्रश्न के उत्तर में विविध-भारती के चीफ प्रॉड्यूसर रहे पंडित नरेन्द्र शर्मा का कथन था- ''हमारे इतने बड़े संस्थान में जिसको कि आकाशवाणी कहा जाता था अनेक ऐसे कार्यक्रम थे, जो निष्णात, बुद्धिजीवी श्रोता.. ज्यादातर उसके लिए थे। अधिक संख्या में वह अखिल भारतीय श्रोता है जिसे हम और किसी बहुत अच्छे शब्द के अभाव में कहेंगे- सामान्य श्रोता, अंग्रेजी में कहें तो ले-लिस्नर। और सामान्य श्रोता की जो आवश्यकताएं थीं उनमें विविधता भी होनी चाहिए और भारतीयता भी होनी चाहिए। तो इन दो आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ''विविध-भारती'' उपयुक्त सिद्ध हुआ और इस प्रकार इसका प्रसारण आरंभ हुआ। (बॉम्बे) मुंबई एवं (मद्रास) चेन्नई, केन्द्र के

“ विविध-भारती की आवश्यकता क्यों पड़ी इस प्रश्न के उत्तर में विविध-भारती के चीफ प्रॉड्यूसर रहे पंडित नरेन्द्र शर्मा का कथन था- ''हमारे इतने बड़े संस्थान में जिसको कि आकाशवाणी कहा जाता था अनेक ऐसे कार्यक्रम थे, जो निष्णात, बुद्धिजीवी श्रोता.. ज्यादातर उसके लिए थे। अधिक संख्या में वह अखिल भारतीय श्रोता है जिसे हम और किसी बहुत अच्छे शब्द के अभाव में कहेंगे- सामान्य श्रोता, अंग्रेजी में कहें तो ले-लिस्नर।